



International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2025; 8(1): 539-548
www.theeconomicsjournal.com
Received: 16-05-2025
Accepted: 13-06-2024

डॉ. दिप्ती कुमारी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर
अर्थशास्त्र विभाग, टीएमबीयू,
भागलपुर, बिहार, भारत

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि संस्कृति का महत्व और विशेषताएं: एक महत्वपूर्ण विश्लेषण

दिप्ती कुमारी

DOI: <https://www.doi.org/10.33545/26179210.2025.v8.i1.577>

सारांश

कृषि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सबसे पुराना, सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह भारत सहित किसी भी अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि के लिए आवश्यक है। स्वतंत्रता के बाद यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में आवश्यक-उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा है। यह अधिकांश जनसंख्या के लिए जीवनयापन का मुख्य साधन है, हमारी राष्ट्रीय आय, उद्योग के लिए कच्चा माल, सरकारी राजस्व, देश के विकास के लिए बचत संभावनाएं और हमारे कामकाजी जनसंख्या का मुख्य पेशा भी है।

भारत में जूट, तंबाकू, तिलहनों, मसालों, कच्चे कपास, चाय और कॉफी जैसे कृषि वस्तुओं का कुल निर्यात मूल्य का लगभग 18% हिस्सा है। कृषि व्यापार कुल विदेशी मुद्रा कमाई का 15% योगदान देता है। कृषि हमारी देश की जनसंख्या का भी पोषण करता है। कृषि परिवहन, बाजार में बिक्री, भारत में आर्थिक योजना, आर्थिक विकास और पूंजी निर्माण को बढ़ावा देने के लिए भी महत्वपूर्ण है। सामान्य रूप से कृषि के महत्व और विशेष रूप से भारत में कृषि के कुछ मूलभूत विशेषताएं: उत्पादन की सामंती प्रकृति, अत्यधिक ब्याज वाले पूंजी और बढ़ती कर्जदारी, श्रम बाजार में द्रव्यता, पुरानी खेती की तकनीकें, कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव और भारतीय कृषि में विविधताएं। कृषि वह क्षेत्र है जो देश में लोगों को अनाज, सब्जियाँ और अन्य आवश्यक चीजें प्रदान करता है। लेकिन यह क्षेत्र पिछले कुछ वर्षों से विभिन्न कारणों जैसे कि उर्वरकों, बीजों, कीटनाशकों, श्रमिक मजदूरी, श्रमिकों की कमी, कृषि वस्तुओं की मूल्य नीति आदि के कारण बहुत कठिन स्थिति में चला गया है। लाखों किसान इस कारण से आत्महत्या कर लेते हैं। सरकार विभिन्न नीतियाँ बनाती है लेकिन इस समस्या का कोई अंतिम समाधान नहीं मिला है।

शब्द-कुंजी: श्रम बाजार, कृषि, आर्थिक विकास, वैश्विक अर्थव्यवस्था, जनसंख्या

1. प्रस्तावना

किसी देश के आर्थिक विकास में कृषि के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। जॉनस्टन और मेलर के शब्दों में, "कृषि की भूमिका के कुछ पहलुओं में, उच्च स्तर की सामान्यता दिखाई देती है, क्योंकि विकास के दौरान कृषि क्षेत्र

Corresponding Author:
डॉ. दिप्ती कुमारी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर
अर्थशास्त्र विभाग, टीएमबीयू,
भागलपुर, बिहार, भारत

की विशेष विशेषताएँ होती हैं"। लेकिन आर्थिक विकास में कृषि का योगदान विभिन्न देशों में विभिन्न चरणों में भिन्न होता है। इसे कई अर्थशास्त्रियों द्वारा विभिन्न आर्थिक विचारों के समय में पहचाना गया था।

उदाहरण के लिए, व्यवहार में, विकासशील देशों में उपलब्ध समग्र विकास दर मुख्य रूप से इसके कृषि पर निर्भर करती है। एक सामान्य अफ्रीकी या एशियाई अर्थव्यवस्था में, कृषि लगभग 50 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का उत्पादन करती है, जबकि सेवाएँ इसके 35 प्रतिशत और उद्योग केवल 15 प्रतिशत का योगदान देते हैं। इस प्रकार, कृषि क्षेत्र की प्रमुखता उत्पादन क्षेत्र की तुलना में अर्थव्यवस्था के विकास का मुख्य निर्धारक बन जाती है। इस पत्र में हमारा लक्ष्य भारत के आर्थिक विकास में कृषि के महत्व और विशेषताओं का विश्लेषण करना है।

2. अनुसंधान पद्धति

इस अनुसंधान पत्र को लिखते समय प्राथमिक और माध्यमिक डेटा स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में किसानों के साथ चर्चा, किसानों का अवलोकन और माध्यमिक डेटा में इंटरनेट, संदर्भ पुस्तकें, सम्मेलन की कार्यवृत्तियाँ आदि शामिल हैं। भारतीय कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा और बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि और संबंधित गतिविधियों पर निर्भर करता है। यह अर्थव्यवस्था को खाद्यान्न, सब्जियाँ, दूध आदि प्रदान करता है। यह विभिन्न उद्योगों को कच्चा माल भी प्रदान करता है। यह कृषि वस्तुओं का निर्यात करके सरकार को विदेशी मुद्रा भी देता है। सरकार योजना बनाते समय इस क्षेत्र को भी ध्यान में रखती है। इसका मतलब है कि यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन पिछले

दो दशकों में, इस क्षेत्र ने विभिन्न कारणों से एक बहुत ही खराब और प्रतिकूल स्थिति का सामना किया है। इनमें से कुछ प्राकृतिक हैं और कुछ मानवीय।

3. कृषि का महत्व

यह स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र को भारतीय अर्थव्यवस्था के जीवन में एक महत्वपूर्ण, बुनियादी और महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है जो न केवल खाद्य-सामग्री बल्कि उद्योग का आवश्यक कच्चा माल भी प्रदान करता है, बल्कि आबादी के एक बड़े हिस्से को रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। यह दुनिया का सबसे पुराना व्यवसाय है और दुनिया की लगभग दो-तिहाई आबादी अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। भारत की राष्ट्रीय आय का लगभग 50% कृषि से प्राप्त होता है। राष्ट्रीय आय, विदेशी मुद्रा और रोजगार में इसका योगदान निस्संदेह प्रभावशाली है। हमारी भारतीय कृषि और अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित हैं:

1. **आजीविका और रोजगार का स्रोत:** भारत में अधिकांश आबादी के लिए कृषि आजीविका का मुख्य स्रोत है। यह हमारे काम करने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय भी है, कृषि लोकप्रिय है। हमारी लगभग 66 प्रतिशत कामकाजी आबादी सीधे भूमि की खेती में लगी हुई है। उन्नत देशों में, यह अनुपात बहुत छोटा है, संयुक्त राज्य अमेरिका में 3 प्रतिशत, ऑस्ट्रेलिया में 4 प्रतिशत, U.K में 5 प्रतिशत, फ्रांस में 6 प्रतिशत, जापान में 12 प्रतिशत और USSR में 18 प्रतिशत है। कृषि में यह उच्च अनुपात इस तथ्य के कारण है कि गैर-कृषि गतिविधियों को तेजी से बढ़ती आबादी को अवशोषित करने के लिए विकसित नहीं किया गया है। देश के नियोजित विकास के दौरान समग्र अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी

में तेजी से गिरावट आई है; यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। झा का कहना है कि रोजगार पर एनएसएस पंचवर्षीय सर्वेक्षण कृषि के हिस्से में गिरावट और कुल रोजगार में गैर-कृषि क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि को दर्शाते हैं। विकासशील अर्थव्यवस्था में इस तरह के संरचनात्मक बदलाव की उम्मीद है, लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में यह धीमा रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में यह प्रक्रिया और भी धीमी

है। फिर भी ग्रामीण भारत में गैर-कृषि क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि दर ग्रामीण कार्यबल में वृद्धि की तुलना में बहुत कम रही है। इसके परिणामस्वरूप, वर्तमान दैनिक स्थिति (सीडीएस) के आधार पर ग्रामीण बेरोजगारी की घटना वर्ष 1999-00 में सात प्रतिशत के रूप में उच्च है। ग्रामीण रोजगार की गुणवत्ता में सुधार का सुझाव देने के लिए कोई प्रमाण नहीं है, जो आम तौर पर रोजगार के संरचनात्मक परिवर्तनों से जुड़ा हुआ है।

तालिका 1: भारत में कुल जनसंख्या, ग्रामीण जनसंख्या और कृषि श्रमिक (करोड़ों में)

वर्ष	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	औसत वार्षिक घातांक वृद्धि दर (%)	कृषि श्रमिक		
				किसान	कृषक	कुल कार्यशील जनसंख्या
1961	361.1	298.6 (82.7)	1.25	69.9 (71.9)	27.3 (28.1)	97.2
1971	439.2	360.3 (82.0)	1.96	99.6 (76.0)	31.5 (24.0)	131.1
1981	548.2	439.0 (80.1)	2.20	78.2 (62.2)	47.5 (37.8)	125.7
1991	683.3	525.6 (76.9)	2.22	92.5 (62.5)	55.5 (37.5)	148.0
2001	846.4	630.6 (74.5)	2.16	110.7 (59.7)	74.6 (40.3)	185.3
2011	11028.7	742.6 (72.2)	1.97	127.3 (54.4)	106.8 (45.6)	234.1
2021	1210.6	833.5 (68.8)	1.64	118.7 (45.1)	144.3 (54.9)	263.0

स्रोत: भारतीय कृषि एक नज़र में 2023

इस संदर्भ में कृषि में रोजगार महत्वपूर्ण बना हुआ है। रोजगार पर हाल के एनएसएस पंचवर्षीय सर्वेक्षण से पता चलता है कि कृषि श्रमिकों की संख्या लगभग स्थिर हो गई है। हालाँकि, 90 के दशक के दौरान कृषि आय में प्रभावशाली दर से वृद्धि हुई है। कृषि में लगे मुख्य श्रमिकों के रोजगार को निम्नलिखित तालिका 1 में देखा जा सकता है।

किसानों की संख्या में वृद्धि हुई और भूमि जोत का उपखंड हुआ लेकिन यह वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी थी यानी i.e। 2001 के दौरान 70 मिलियन से 127 मिलियन तक, लेकिन हाल ही में घटकर 118.7 मिलियन हो गया है। दूसरी ओर, कृषि मजदूर बहुत तेज दर यानी i.e. पर बढ़ गए। इस अवधि के दौरान लगभग छह बार। भूमिहीन

मजदूरों में तेजी से वृद्धि ने इस प्रकार कम रोजगार और कम मजदूरी दर के कारण ग्रामीण गरीबी में वृद्धि की।

II. राष्ट्रीय आय में योगदान: कृषि हमारी राष्ट्रीय आय का प्रमुख स्रोत है। 1950-51 में राष्ट्रीय आय समिति और केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार, राष्ट्रीय आय का 53 प्रतिशत कृषि और संबद्ध व्यवसायों द्वारा योगदान दिया गया था। 1970-71 में अकेले इस क्षेत्र का योगदान 42.3 प्रतिशत था जबकि 1990-91 में इसका योगदान घटकर 29.6 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2012-13 में इसने राष्ट्रीय आय में 14 करोड़ से भी कम का योगदान दिया। अन्य क्षेत्रों की हिस्सेदारी समय के साथ बढ़ रही है (तालिका 2) इसके विपरीत, U.K. में कृषि का अनुपात केवल 2% था, USA में यह

2.2% और ऑस्ट्रेलिया में 2% है। इन सब का निष्कर्ष यह है कि एक देश जितना अधिक विकसित होता है, राष्ट्रीय उत्पादन में कृषि का योगदान उतना ही कम होता है। कृषि क्षेत्र की प्रकृति के अनुसार, जिसका विकास अन्य क्षेत्रों की तुलना में धीमा है, समय के साथ इस क्षेत्र की हिस्सेदारी में गिरावट आ रही है जो अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के बढ़ते सापेक्ष महत्व को दर्शाती है। राज्यों में भी जी. एस. डी. पी. में कृषि का योगदान 2009-10 में पंजाब में 34.1%, बिहार में 03.1% और U.P. में 27.8% था। और पांडिचेरी राज्य में 2.6% के रूप में कम। हालांकि,

राज्य की सभी अर्थव्यवस्थाओं के विकास के साथ, कृषि का प्रतिशत योगदान कम हो रहा है। वर्ष 2012-13 में इन राज्यों की कृषि का योगदान क्रमशः 21.7%, 19.8%, 20.4% और 2.7% था। साइमन कुजनेट्स ने ठीक यही परिकल्पना की थी। किसी क्षेत्र का विकास पूंजी निवेश पर निर्भर करता है। सकल पूंजी निर्माण द्वारा मापा गया, कृषि क्षेत्र ने अस्सी के दशक की शुरुआत तक तेजी से प्रगति की, लेकिन अस्सी के दशक के मध्य से सकल पूंजी निर्माण में कृषि की हिस्सेदारी में भारी गिरावट आई है जो ठहराव की प्रवृत्ति को दर्शाती है।

तालिका 2: सकल घरेलू उत्पाद की क्षेत्रवार संरचना (%)

वर्ष	कृषि	उद्योग	सेवाएँ
1970-71	53.1	16.6	30.3
1990-91	42.3	24.0	33.8
2010-11	29.6	27.7	42.7
2012-13	14.5	28.2	57.3
2022-23	13.7	26.7	59.6

स्रोत: वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय, भारत सरकार

III. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कृषि का महत्व: यह कृषि कच्चा माल है जो भारत के आंतरिक और बाहरी व्यापार की मुख्य वस्तुओं को स्थापित करता है। कृषि क्षेत्र देश के व्यापार और परिवहन का पोषण भी करता है। चाय, चीनी, चावल, तंबाकू, सूती मसाले आदि जैसे कृषि उत्पाद भारत के निर्यात की मुख्य वस्तुएँ हैं। उन्हें निर्यात करके, बहुत आवश्यक मशीनरी और निर्मित वस्तुओं के बदले में आयात करना संभव हो गया है। वास्तव में, जो कृषि वस्तुएं निर्यात की जाती हैं, वे हमारे निर्यात का एक बड़ा प्रतिशत हैं। विदेशी मुद्रा आय और देश के आर्थिक विकास के लिए इसका बहुत महत्व है।

कृषि व्यापार कुल विदेशी मुद्रा आय का 15% योगदान देता है। भारत के प्रमुख कृषि-निर्यात अनाज, चावल, बासमती चावल और गैर-बासमती चावल, मसाले, तेल केक, तंबाकू गैर-निर्मित, चाय, कॉफी और समुद्री उत्पाद हैं। उच्च टैरिफ और स्पष्ट गैर-टैरिफ बाधाओं के कारण विकसित बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में बाजार पहुंच की कमी निर्यात के लिए एक निवारक के रूप में काम कर रही है। कृषि निर्यात के मुकाबले, कृषि-आयात देश के कुल आयात का केवल 5% का एक छोटा अनुपात है। कृषि निर्यात का हिस्सा तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3: भारत के कुल निर्यात में कृषि निर्यात का हिस्सा

वर्ष	कुल निर्यात (मिलियन USD)	कृषि और संबद्ध उत्पादों का निर्यात (मिलियन USD)	कृषि निर्यात का प्रतिशत भाग
1999-00	17865.4	3202.5	17.9
2000-01	36822.4	5608.0	15.2
2001-02	44560.3	5973.2	13.4
2002-03	43826.7	5901.2	13.5
2003-04	52719.4	6710.0	12.7
2004-05	63842.6	7533.1	11.8
2005-06	83535.9	8474.7	10.1
2006-07	103090.5	10213.8	9.9
2007-08	126361.5	12683.5	10.0
2008-09	159006.7	19398.8	12.2
2009-10	173865.3	17774.5	10.2
2010-11	184770.0	19572.4	10.6
2020-21	193570.0	20324.9	10.5

स्रोत: वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय, भारत सरकार

IV. भोजन और चारे की आपूर्ति: यह कृषि है जो हमारे देश की आबादी का पोषण करती है। पिछले तीन दशकों के दौरान, यह हमारी खाद्य आवश्यकताओं को पूरी तरह से पूरा करने में विफल रहा है और हमें अपने लाखों लोगों को खिलाने के लिए भारी वार्षिक खाद्य आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। हरित क्रांति के बाद, देश में उत्पादित खाद्यान्न का कुल मूल्य बहुत बढ़ा होगा, जो देश की कुल खाद्य आवश्यकताओं का औसतन केवल 2% आयात करता है। वर्ष 2008-09 के दौरान देश में 2339 लाख टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ। हाल के वर्षों में खाद्यान्न के आयात के बजाय हमारा शुद्ध निर्यात हुआ है। कृषि क्षेत्र पशुधन और कुक्कुट के लिए चारा भी प्रदान करता है। मवेशी और भैंस दूध, अंडे के रूप में सुरक्षात्मक भोजन प्रदान करते हैं और वे कृषि कार्यों के लिए भारी शक्ति भी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, यह लोगों की भोजन की आवश्यकता को भी पूरा करता है। निस्संदेह, आजादी के बाद के तीन दशकों के दौरान, यह हमारी खाद्य आवश्यकताओं को पूरी तरह से पूरा

करने में विफल रहा और हमें विदेशों से भारी खाद्य आयात पर निर्भर रहना पड़ा।

V. विदेशी मुद्रा संसाधनों में योगदान: भारत में विदेशी मुद्रा संसाधनों में कृषि क्षेत्र का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। यह देश के निर्यात व्यापार में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक अनुमान के अनुसार, भारत में निर्यात के कुल मूल्य में जूट, तंबाकू, तिलहन, मसाले, कच्चा कपास, चाय और कॉफी जैसी कृषि वस्तुओं का योगदान लगभग 18 प्रतिशत है। इससे पता चलता है कि कृषि उत्पाद अभी भी विदेशी मुद्रा अर्जित करने का महत्वपूर्ण स्रोत बने हुए हैं।

VI. उद्योग के लिए कच्चे माल का स्रोत: कृषि न केवल अर्ध-कृषि क्षेत्र में बल्कि मुख्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी कपास और जूट वस्त्र, चीनी, तंबाकू, खाद्य और मानव खाद्य तेल आदि जैसे प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत और आपूर्ति रही है। जो सीधे कृषि पर निर्भर करते हैं। इसके अलावा, कई अन्य जैसे फलों और सब्जियों का

प्रसंस्करण, दाल मिलिंग, चावल की भूसी, गुड़ बनाना भी अपनी कच्ची सामग्री के लिए कृषि पर ध्यान आकर्षित करते हैं। संयुक्त राष्ट्र के सर्वेक्षण के अनुसार, कृषि मूल के कच्चे माल वाले उद्योगों का भारत में औद्योगिक क्षेत्र में सभी नौकरियों का 50 प्रतिशत और 64 प्रतिशत हिस्सा है।

VII. विपणन योग्य अधिशेष: कृषि क्षेत्र के विकास से विपणन योग्य अधिशेष प्राप्त होता है। जैसे-जैसे देश का विकास होता है, वैसे-वैसे अधिक से अधिक लोगों को खनन विनिर्माण और अन्य गैर-कृषि क्षेत्र में शामिल किया जाना है। ये सभी लोग उस खाद्य उत्पादन पर निर्भर करते हैं जो अधिशेष के रूप में बाजार में आता है। यहाँ, यह उल्लेखनीय है कि जापानी और रूसी औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं का विकास कृषि के अधिशेष से संभव हुआ था जिसे औद्योगिक क्षेत्र में स्थानांतरित किया जा सकता था। भारत के मामले में ऐसा न करने का कोई कारण नहीं है।

viii. परिवहन में महत्व: कृषि रेलवे और सड़क मार्गों के लिए मुख्य सहारा है जो कृषि उपज के बड़े हिस्से को खेत से मंडियों और कारखानों तक पहुँचाते हैं। आंतरिक व्यापार ज्यादातर कृषि उत्पादों में होता है। इसके अलावा, सरकार का वित्त। काफी हद तक कृषि क्षेत्र की समृद्धि पर भी निर्भर करता है।

IX. सरकारी राजस्व का स्रोत: कृषि देश की केंद्र और राज्य सरकारों दोनों के लिए राजस्व का मुख्य स्रोत है। सरकार को न केवल भूमि राजस्व से पर्याप्त आय मिलती है, बल्कि रेलवे की समृद्धि और कई अन्य स्रोतों से आय भी अनुकूल कृषि पर निर्भर है। राज्य सरकारों द्वारा कृषि पर भूमि राजस्व, कृषि आयकर, सिंचाई कर और कुछ अन्य प्रकार के कर लगाए जा रहे हैं।

इसके अलावा, कृषि उत्पादों पर उत्पाद शुल्क और निर्यात शुल्क के माध्यम से काफी राजस्व अर्जित किया जाता है। कृषि कराधान पर राज समिति ने राजस्व बढ़ाने के लिए कृषि आय पर कराधान लगाने का सुझाव दिया है। वास्तव में, एक खराब कृषि वर्ष सरकार और लोगों दोनों के लिए एक बुरा वर्ष है।

X. आर्थिक नियोजन में कृषि: भारत में नियोजन की संभावनाएँ कृषि क्षेत्र पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं। एक अच्छी फसल हमेशा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के लिए एक बेहतर व्यावसायिक वातावरण बनाकर देश के नियोजित आर्थिक विकास की दिशा में प्रोत्साहन प्रदान करती है। एक अच्छी फसल सरकार को अपने नियोजित व्यय को पूरा करने के लिए अच्छी मात्रा में वित्त भी लाती है। इसके विपरीत, एक खराब फसल देश के व्यापार में पूरी तरह से मंदी का कारण बनती है, जो अंततः आर्थिक योजना की विफलता की ओर ले जाती है।

XI. बचत का स्रोत: कृषि में सुधार से बचत बढ़ाने में काफी मदद मिल सकती है। ऐसा देखा जा रहा है कि देश में हरित क्रांति के बाद अमीर किसानों ने बचत करना शुरू कर दिया है। इस अतिरिक्त राशि को कृषि क्षेत्र में निवेश किया जा सकता है ताकि इस क्षेत्र का विकास हो सके। कृषि क्षेत्र में बचत की अपार संभावनाएँ हैं जिनका देश के विकास के लिए उचित रूप से उपयोग किया जा सकता है।

XII. समग्र आर्थिक विकास: आर्थिक विकास के क्रम में, कृषि अधिकांश लोगों को रोजगार देती है। इसका अर्थ है राष्ट्रीय आय के स्तर और आम आदमी के जीवन स्तर को बढ़ाना। कृषि क्षेत्र में तीव्र विकास दर प्रगतिशील दृष्टिकोण और विकास

के लिए आगे की प्रेरणा देती है। नतीजतन, यह अर्थव्यवस्था के सामान्य आर्थिक विकास के लिए उचित वातावरण बनाने में मदद करता है। इस प्रकार, आर्थिक विकास कृषि के विकास की दर पर निर्भर करता है।

XIII. आर्थिक विकास का आधार: प्रो. नूर्कसे ने अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास के लिए कृषि में सुधार पर पर्याप्त जोर दिया है। कृषि का विकास उद्योग, परिवहन और विदेशी व्यापार जैसे अन्य क्षेत्रों के विकास के लिए आवश्यक पूंजी प्रदान करता है। वास्तव में, कृषि और उद्योग का संतुलित विकास आज की आवश्यकता है।

XIV. पूंजी निर्माण को बढ़ावा देना: प्रो. नूर्कसे के अनुसार प्रच्छन्न बेरोजगारी पूंजी निर्माण का एक संभावित स्रोत है। इसी तरह, प्रो. लुईस की राय थी कि कृषि क्षेत्र की अधिशेष श्रम शक्ति को कम मजदूरी दर पर औद्योगिक क्षेत्र में लाभकारी रूप से लगाया जा सकता है। इसके अलावा, कृषि मानव पूंजी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि में भारत के प्रच्छन्न बेरोजगारों को उत्पादक रूप से लगाया जा सकता है। इससे देश में पूंजी निर्माण में मदद मिलेगी। तालिका 4 इंगित करती है कि कृषि में पूंजी में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ रही है। कुल पूंजी निर्माण में से कृषि का हिस्सा तेजी से कम हो रहा है।

तालिका 4: भारतीय कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में कुल पूंजी निर्माण (जीसीएफ) (1993-94 के मूल्यों पर) (₹. करोड़ों)

Year	Public sector	Private sector	Total	% of total GCF
1970-71	2400	2858	5258	13.1
1980-81	3216	5371	8587	14.3
1990-91	7301	6932	14233	15.4
2000-01	4992	1142.4	16416	9.9
2010-11	4435	15374	19809	7.6
2020-21	32073	161513	193586	7.1

स्रोत: भारतीय कृषि एक नज़र में - 2023

उपरोक्त स्पष्टीकरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक विकास का कोई भी कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उसे एक मजबूत कृषि आधार द्वारा समर्थित न किया जाए। भारत जैसे देश में, जहां अधिकांश लोग कृषि में लगे हुए हैं, इसे सर्वोच्च प्राथमिकता मिलती है। इसलिए देश में आर्थिक नियोजन की सफलता के लिए कृषि क्षेत्र के विकास पर उचित जोर दिया जाना चाहिए।

4. भारतीय कृषि संस्कृति की विशेषताएं

सामान्य रूप से और विशेष रूप से भारत में कृषि के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हम भारतीय

कृषि की कुछ बुनियादी विशेषताओं का उल्लेख करते हैं:

I. उत्पादन का सामंती चरित्र: आजादी के समय भारत में कृषि का चरित्र पूरी तरह से सामंती था। उन दिनों भूमि कार्यकाल प्रणाली ज्यादातर जमींदारी, महरवाड़ी और रैयतवाड़ी प्रकार की थी। प्रमुख भाग i.e. कुल क्षेत्र का लगभग 57 प्रतिशत जमींदारी प्रणाली के तहत था जिसने जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण का मार्ग प्रशस्त किया। रैयतवाड़ी प्रणाली में इस तरह का शोषण प्रचलित था। स्वतंत्रता के बाद से बिचौलियों को समाप्त करने के लिए राज्य सरकारों द्वारा भूमि सुधार उपायों की शुरुआत के बाद, खाद्य प्रणाली के

चरित्र में ज्यादा बदलाव नहीं आया। जमींदारी प्रणाली के उन्मूलन ने अनुपस्थित जमींदारों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। इन अनुपस्थित जमींदारों ने अपने मालिकों से काफी आर्थिक शक्ति प्राप्त की, विशेष रूप से: (i) किराए पर लिए गए मजदूरों के माध्यम से भूमि की खेती; (ii) भूमि को किरायेदारों को पट्टे पर देना; (iii) खाद्यान्न और अन्य वस्तुओं का व्यापार। जमींदारों की तरह, यह अनुपस्थित जमींदार भारत में शासक वर्ग बन गए। ये जमींदार अभी भी किरायेदारों और कृषि श्रमिकों का शोषण कर रहे हैं। कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 50 प्रतिशत अपनी इच्छानुसार किरायेदारों और उप-किरायेदारों की श्रेणी में है। इसके अलावा, कृषि मजदूरों की दो श्रेणियां हैं: (i) संलग्न मजदूर और (ii) आकस्मिक मजदूर। लेनटों की बढ़ती बेदखली के साथ, कृषि मजदूरों की संख्या भी बढ़ रही है, जिससे ग्रामीण गरीबों में प्रोवर्टी और दुख की डिग्री में वृद्धि हो रही है।

II. सूदखोर पूंजी और बढ़ता कर्ज: भारतीय कृषि में सूदखोर पूंजी का उपयोग काफी अधिक मात्रा में होता है और इससे गरीब किसानों के बीच कर्ज बढ़ जाता है। स्वतंत्रता पूर्व अवधि के दौरान, साहूकार और महाजन अत्यधिक ब्याज दर पर कृषि ऋण के पूरे हिस्से की आपूर्ति कर रहे थे, जिससे किसानों का शोषण हो रहा था। हालाँकि, स्वतंत्रता के बाद सरकार ने विभिन्न कदम उठाए जैसे-सहकारी ऋण समितियों का विकास, ग्रामीण ऋण बढ़ाने में बैंकों की भागीदारी आदि। लेकिन ये सभी संस्थान छोटे और सीमांत किसानों को लाभान्वित नहीं कर सके।

परिणामस्वरूप वे अपनी ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गाँव के साहूकारों पर निर्भर रहे। वे साहूकार अभी भी बहुत अधिक ब्याज ले रहे हैं और अंततः इन छोटे और सीमांत किसानों

की जमीन हड़प रहे हैं।

III. श्रम बाजार में द्वैतवाद: भूमि पर जनसंख्या के अत्यधिक दबाव के कारण भारत में श्रम बाजार का द्वैतवाद प्रचलित हो गया। औद्योगिक क्षेत्र की तुलना में कृषि क्षेत्र में मजदूरी का स्तर बहुत कम है। यह द्वैतवाद भारत में अस्तित्व में आने लगा। कृषि के बाहर बेहतर अवसरों के बारे में श्रमिकों की अज्ञानता और आधुनिक औद्योगिक प्रणाली में काम करने में उनकी असमर्थता के कारण श्रम बाजार। कृषि क्षेत्र में मजदूरी का निम्न स्तर कम प्रति व्यक्ति आय के लिए जिम्मेदार है जो बदले में श्रम उत्पादकता को कम करता है।

IV. पुरानी कृषि तकनीक: भारतीय कृषि में अभी भी उत्पादन की रूढ़िवादी और पुरानी कृषि तकनीकों का उपयोग किया जाता है। कृषि कार्यों का बड़ा हिस्सा अभी भी ऊर्जा के जैविक स्रोतों पर निर्भर है, i.e। मानव और पशु श्रम, वर्षा जल और अंगों की खाद (गोबर) 1966-67 के दौरान नई कृषि रणनीति को अपनाने के बाद, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में नए एचवाईबी बीजों के साथ उत्पादन की आधुनिक तकनीकों की शुरुआत की गई। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप कृषि के प्रमुख हिस्से के रूप में एक अंतर-क्षेत्रीय तकनीकी द्वैतवाद भी हुआ है और रूढ़िवादी तरीकों का पालन करना जारी है, जबकि केवल कुछ क्षेत्रों ने आधुनिक तकनीकों का पालन करना शुरू किया है। भारतीय कृषि में अंतर-व्यक्तिगत तकनीकी द्वैतवाद भी अस्तित्व में आने लगा क्योंकि नई तकनीक महंगी होने के कारण अमीर किसानों द्वारा इसे अपनाया जाना जारी है। दूसरी ओर, छोटे और सीमांत किसान अपनी जागरूकता

के बावजूद वित्तीय बाधाओं के कारण पुरानी तकनीकों का पालन करना जारी रखते हैं।

V. कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव: हमारी कृषि की एक अन्य विशेषता यह है कि देश का कुल कृषि उत्पादन बहुत उतार-चढ़ाव के अधीन है। कृषि उत्पादन में इस बड़े पैमाने पर उतार-चढ़ाव के लिए मानसून पर निर्भरता सबसे महत्वपूर्ण कारक है। देश का शुद्ध सिंचित क्षेत्र 1950-51 में 20.8 मिलियन हेक्टेयर से बढ़कर 2010-11 में 63.6 मिलियन हेक्टेयर हो गया है।

इस प्रकार शेष 36 प्रतिशत शुद्ध बुवाई क्षेत्र अभी भी मानसून पर निर्भर है। इस प्रकार भारतीय कृषि कार्यों को अभी भी मानसून का जुआ माना जा सकता है क्योंकि प्रकृति अभी भी देश के कृषि उत्पादन की मात्रा निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभा रही है। इसके अलावा, 1965 के बाद की अवधि में जैव-रासायनिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के कारण वर्षा में भिन्नता के प्रति उत्पादन की संवेदनशीलता में वृद्धि हुई है।

VI. भारतीय कृषि में विविधता: कृषि विविधताओं की उपस्थिति भारतीय कृषि की एक और बुनियादी विशेषता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में मिट्टी की मात्रा, वर्षा की मात्रा, पानी की उपलब्धता आदि जैसी प्राकृतिक स्थितियों में बहुत अंतर हैं। कुछ क्षेत्र सूखे की स्थिति का सामना कर रहे हैं, जबकि कुछ अन्य क्षेत्र बाढ़ की स्थिति का सामना कर रहे हैं, कुछ अन्य क्षेत्र जलभराव और लवणता की समस्या का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, देश के विभिन्न राज्यों के बीच भूमि कार्यकाल प्रणाली और श्रम संबंधों में काफी अंतर है। उप-विभाजन और जोतों के विखंडन के संबंध में पर्याप्त क्षेत्रीय असमानताएँ अभी भी मौजूद हैं। इस प्रकार भारतीय कृषि में इतनी बड़ी विविधताओं की उपस्थिति में किसी समस्या का

सामान्यीकरण करना और सभी विभिन्न क्षेत्रों के लिए एक समान एकल नीति अपनाना काफी कठिन है।

5. भारतीय कृषि के लिए संभावनाएँ

भारत जनसंख्या के मामले में चीन के बाद दुनिया में दूसरे स्थान पर है। यह कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र में भी दुनिया में दूसरे स्थान पर है। हाल के समय में एक कृषि अर्थव्यवस्था बनने के कारण भारत में खाद्य अनाज की कमी है। लेकिन हरित क्रांति के बाद उत्पादन में वृद्धि हुई है। लेकिन जनसंख्या भी तेजी से बढ़ रही है। जनसंख्या वृद्धि की तुलना में अन्य क्षेत्रों जैसे उद्योग और सेवा क्षेत्र में विकास नहीं हुआ है। इसलिए कृषि पर रोजगार, खाद्य अनाज, सब्जियाँ, दूध आदि के लिए बड़ा दबाव है। यह कृषि क्षेत्र की जिम्मेदारी है कि वह देश के लोगों को खाद्य अनाज, सब्जियाँ, दूध आदि प्रदान करे। केंद्रीय सरकार के अनुसार, भारत का खाद्य उत्पादन 2023-24 में 291.95 मिलियन टन था और 2024-25 के लिए सरकार ने 298.3 मिलियन टन खाद्य उत्पादन का लक्ष्य रखा है, जो 2050 तक दोगुना होना चाहिए ताकि देश की जनसंख्या और आय वृद्धि के साथ मेल खा सके।

यह कृषि के लिए एक बहुत बड़ा और अप्राप्य लक्ष्य है क्योंकि भूमि की उत्पादकता लगातार खेती, रासायनिक पदार्थों, कीटनाशकों आदि के निरंतर उपयोग के कारण कम होती जा रही है। उपजाऊ भूमि की गुणवत्ता दिन-ब-दिन घटती जाएगी। कोई भी किसान अनिश्चितता के कारण भूमि को खेती करने के लिए तैयार नहीं होगा, जब उसे आय का कोई अन्य स्रोत मिलेगा, तो वह भूमि छोड़ने के लिए तैयार होगा। दूसरी ओर, बढ़ती जनसंख्या के कारण भोजन, कपड़े और आश्रय की आवश्यकता है। कपड़ों के लिए अधिक कपास का उपयोग आवश्यक हो गया है और

आश्रय के लिए लोग कृषि भूमि का उपयोग कर रहे हैं जैसे कि रो हाउस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, फ्लैट सिस्टम, मॉल, सड़कें आदि के निर्माण के लिए। इसलिए उपजाऊ भूमि का क्षेत्र दिन-ब-दिन घटता जा रहा है। क्योंकि भूमि प्रकृति का उपहार है और इसका आकार सीमित है। हम इसके आकार को बढ़ा या घटा नहीं सकते। यह हर राष्ट्र के लोगों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। खाद्यान्न, सब्जियों की पूर्ति के लिए भूमि सीमित होगी और इसकी मांग दिन-ब-दिन बढ़ती जाएगी।

6. निष्कर्ष

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में कृषि सबसे पुराना, सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अधिकांश विकासशील देशों में कृषि ही एकमात्र प्रमुख मौजूदा उद्योग है। इसलिए, इनमें से अधिकांश देशों को अपने आर्थिक विकास के लिए कृषि क्षेत्र के विकास पर बहुत अधिक निर्भर रहना पड़ता है ताकि भोजन की मांग को पूरा किया जा सके, ओवरहेड निवेश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सके और रोजगार की बढ़ती मांग को पूरा करने और ग्रामीण लोगों की धन आय बढ़ाने के लिए द्वितीयक उद्योगों का विस्तार किया जा सके। अधिकांश विकसित देशों जैसे इंग्लैंड, U.S.A., U.S.S.R., कनाडा, जापान आदि के ऐतिहासिक अनुभव औद्योगिक क्रांति की शुरुआत में देशों के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में कृषि के महत्व को प्रकट करते हैं।

अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के लिए कृषि और उद्योग के बीच उचित संतुलन आवश्यक है क्योंकि ये दोनों उद्योग परस्पर निर्भर हैं। समृद्ध खनिज संसाधनों वाले देशों को छोड़कर, कोई भी अविकसित देश कृषि की उपेक्षा करके तेजी से विकास नहीं कर सकता है। इसके अलावा, कृषि को मशीनरी, कृषि उपकरणों के लिए उद्योग पर निर्भर रहना पड़ता है और उद्योग को खाद्य और

कच्चे माल जैसे कपास, जूट, तिलहन आदि के लिए कृषि पर निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए, किसी भी राष्ट्र के स्वस्थ और स्थिर आर्थिक विकास के लिए, कृषि और अन्य क्षेत्रों के बीच एक उचित संतुलन बनाए रखा जाना चाहिए।

7. संदर्भ

1. अर्जुन, केएम, भारतीय कृषि-स्थिति, महत्व और भारतीय अर्थव्यवस्था में भूमिका। अंतर्राष्ट्रीय कृषि और खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी पत्रिका। 2023;4:343-346।
2. विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ, मसौदा।
3. कृषि और सहयोग विभाग। कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।
4. NSSO के अंतिम पंचवर्षीय सर्वेक्षणों के दौरान कृषि में रोजगार।
5. भारत सरकार (2023-24)। एक नज़र में कृषि सांख्यिकी, कृषि मंत्रालय, <http://agricoop.nic.in>
6. भारत की आर्थिक सर्वेक्षण, विभिन्न अंक।
7. जॉनस्टन, बीएफ और जोह, डब्ल्यू। मेलर, आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका, अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, कैलिफोर्निया, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय। 1991;51:566।
8. झा, ब्रजेश। भारतीय कृषि में रोजगार, वेतन और उत्पादकता, आर्थिक विकास संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय एनक्लेव, नॉर्थ कैम्पस, दिल्ली, भारत, वेबसाइट: <http://iegindia.org>